सिन्धुजनों ने रखी थी वैदिक संस्कृति की नींव

भारत के प्रखयात पुरातत्ववेत्ता डॉ.एस.आ.राव ने सिन्धु घाटी की सभ्यता के संबंध में जो चुनौतीपूर्ण शोधकार्य एवं तुलनात्मक अध्ययन कियावह अविस्मरणीय एवं अति महत्वपूर्ण है।

उन्होने 'मोहन जोदडों' के उत्खनन से प्राप्त अपशेषों एवं मुद्राओं आदि पर अंकित लिपि, चिन्हों एवं आकृतियों को पढने में सफलता प्राप्त करने का दावा किया है। भारत तथा विदेशों के विद्धार्नों ने भी उनके इस खोजपूर्ण प्रयासों की खुले दिल से सराहना की हैं।

भौगोलिक स्थिति एवं क्षेत्रफल

डॉ.एस.आ.राव सिन्धु सभ्यता की भौगोलिक स्थिति के संबंध में बताते है,'अब यह प्रमाणित हो चुका है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता, जिसका दूसरा नाम हडप्पन सभ्यता भी है, अफगानिस्तान अश्वस्थान से लेकर दिल्ली तक और कश्मीर से लेकर ताप्ती घाटी तक फैली हुई। इतना ही नहीं बल्कि वर्तमान रुस के कुछ भागों तक यह सभ्यता फैली हुई थी। इसके क्षेत्रफल का सही–सही पता तो अभी नहीं लगाया गया है, पर यह सभ्यता अन्य दो विश्वविश्रुत इतिहास–प्रसिद्ध सभ्यताओं–मिस्री सभ्यता एवं सुमेर सभ्यता, दोनों के क्षेत्रों से अधिक क्षेत्र में फैली हुई थी और इसका क्षेत्रफल लगभग 1400 गुणा 1800 किलोमीटर रहा होगा।

देवलोक की कल्पना

सिन्धु घाटी की सभ्यता के विकास एवं सांस्कृतिक विशिष्टताओं का उल्लेख करते हुए वे बडे विश्वास के साथ कहते हैं,'यह सभ्यता अन्य समकालीन सभ्यताओं से अधिक विकसित,सुसंस्कृत एवं सम्पन्न थी। इसमें मोहन–जोदडों,हउप्पा,कालीबंगा एवं लोथल जैसे पुउुख नगर थे। आधुनिक समय में हम जिस देवलोक की कल्पना करते है, मेरे ख्याल से वह क्षेत्र यही थे। यहां के लोग शिक्षित और सभ्य थें। मैने अपनी खोज एवं प्राप्त स्त्रोतों के आधार पाया है कि उनलोगों के शब्द –शक्ति भंडार के 250 शब्द एवं 82 धातुयें ऋग्वेदिक संस्कृत में भी देखने को मिलती है।'

वैदिक संस्कृति की नींव

डॉ. राव ने इस बात को भ्रामक बताया है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता द्राविडों की देन है। उनकी मान्यता है कि सिन्धुजन ही वैदिक सभ्यता की नींव रखने वाले है। इस संबंध में उन्होनें अपना स्पष्ट मत प्रकट करते हुये कहा है, 'लोगों का यह भ्रम था कि सिन्धु घाटी की सभ्यता द्रविडों की थी,पर अब यह मान्यता समाप्त हो गई है। वैदिक संस्कृति की नींव रखने वाले सिन्धु घाटी के लोग ही इस सभ्यता के वासी थें। इस काल के बलि और पूजा के प्रमाण, जो ऋग्वैदिक काल की संस्कृति में भी मिलते है इस बात के स्पष्ट प्रमाण है।,

उक्त मत की पुष्टि

प्रसिद्ध पुरातत्तवेत्ता विष्णु श्रीधर वाकणकर ने उक्त मत की पुष्ट करते हुये लिखा है,'सिन्धु घाटी सभ्यता से संबंधित मुद्राओं को पढ कर में इससे परिणाम पर पहुंचा हूं कि सिन्धु घाटी की लिपि भारतीय है और उसका मूल आर्य सभ्यता में हैं'।

पं.कृष्णचन्द्र जैतली का कहना है कि 'पुरातत्ववेत्ता एल.ए.वडडेल पहले विद्धान हैं, जिन्होने सर्वप्रथम मोहन–जोदडों की मुहरों को पढने का प्रयास किया। वडडेल के कथनानुसार 'सिन्धु घाटी के निवासी आर्य थे, जिन्होने एशिया की संस्कृतियों को जन्म दिया।'

वर्णमाला की खोज

उत्खनन से प्राप्त 3126 मुहरों में से 1800 मुहरों का अध्ययन करने के पश्चात डॉ.एस.आर.राव सिन्धु घाटी की सभ्यता के लोगों व्दारा संसार को दी गई उत्कृष्ट देन का रहस्योदघाटन करते हुये एक उल्लेखनीय बात कहते है,इस सभ्यता के निवासी पहले लोग थे,जिन्होने संसार में सबसें पहले वर्णमाला की खोज की। बाद की सभ्यतायें तो इनके उधार से ही फली फूली हैं।'

नये सिरे से इतिहास लिखना होगा

डॉ. राव इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि उक्त संबंध में किये गये शोध कार्यो के आधार पर अब भारत के इतिहास को नये सिरे से लिखना होगा। उन्होने इसका कारण यह बताया है,'इससे यह स्पष्ट हो जायेगा कि इसके लोग आर्य थे, जो ऋग्वैदिक काल की सभ्यता से पहले रह चुके थे और 'आर्यो ने द्रविड सभ्यता का विनाश किया 'जैसी भ्रमित धारणाओं का निराकरण हो सकेगा। वास्तव में आर्यो ने द्रविड सभ्यता का विनाश नहीं किया था। वह तो बाढ के कारण समाप्त हुई थी। इसके आधार पर इतिहास को नये सिरे से लिखने से अनेक रहस्य और भारतीय संस्कृति के महान आदर्श सामने आयेगें। इस प्रकार लिखा हुआ इतिहास अधिक प्रमाणिक होगा और साथ ही भारोपीय भाषाओं के पुनर्निर्माण में सहायता मिलेगी।'

सिन्धु सभ्यता की विशिष्टता

इतिहास एवं पुरातत्ववेत्ता किरण कुमार थपल्याल एवं संकटाप्रसाद शुक्ल ने अपनी पुस्तक 'सिन्धु सभ्यता में शि. रंगनाथ राव के कथन की सत्यता को इस प्रकार उद्धत किया है,'सिन्धु सभ्यता के लोगों ने अपनी संस्कृति की विशिष्टता को विदेशी संस्कृति के प्रभाव से बलपूर्वक बचाया। सुनियोजित नगर व्यवस्था, सार्वजनिक स्नानागार,विशिष्ट प्रकार की अभिलिखित मुद्रायें और विशिष्ट प्रकार के मृदभाण्ड और उन पर अलंकरण की विधाा सिन्धु सभ्यता को प्राचीन विश्व संस्कृति के इतिहास में एक अलग स्थान प्रदान करते है। सिन्धु सभ्यता की मूर्तियां भी अपनी विशिष्टता लिये है जो अन्य सभ्यताओं की कृतियों से अलग पहचानी जाती है मिस्र और मेसोपोटामिया में साधारण जनों के भवन तो साधारण कोटि के थे किंतु राजाओं की कब्रें और देवताओं कें मंदिर अत्यंत वैभवशाली बनाये गये थें। सिन्धु सभ्यता के नगरों के साधारण जनों के भवन मेसोपोटामिया और मिस्र के नागरिकों के भवन की तुलना में कहीं विशाल और आरामदेह है। सिन्धु सभ्यता की इससे अधिक विशिष्टता यह है कि वह परवर्ती हिन्दू धर्म के कितने ही मुख्य तत्व बीज रुप में लिये हुयें। '

पूजा अर्चना में समानता

इतिहासविद व्दारकाप्रसाद शर्मा अपनी पुस्तक 'प्राचीन सिन्धु सभ्यता 'में लिखते हैं, 'पशु और वृक्ष पूजा के भी प्रमाण प्राचीन सिन्धु सभ्यता में पाये गये हैं। वृक्ष पूजा दो प्रकार की ज्ञात होती है। एक वृक्ष के वास्तविक रुप में,दूसरे उसके अधिदेवता के रुप में। मोहन जोदडों से एक विशेष रुप वाली स्नान महाद्रोणी आदि के प्राप्त होने से यह प्रमाणित होता है कि स्नान के व्दारा शौच अथवा संस्कार विधी से अभिषेक, आधुनिक हिन्दू धर्म के समान सिन्ध की प्राचीन सभ्यता के धर्म का एक अंग था। सारांश यह है कि मातृदेवी या शक्ति की पूजा,शिव के पूर्व रुपी पुरुष देवता की पूजा,लिंग और योनि के प्रतीको की पूजा योग अभ्यास आदि प्रमाण इस बात को सिद्ध करते है कि प्राचीन सिन्धवासियों को धर्म,कुछ बाहरीअंगों के होते हुये भी मुख्यतःभारत की पवित्र भूमि और वैदिक धर्म कीउपज थी और वह हिन्दू धर्म का पूर्व रुप ही था'।

वे आगे लिखते हैं, आज हम जिसे 'हिन्दूत्व' कहते और मानते है प्रायः वह सब बातें सिन्धु घाटी की सभ्यता में पाई जाती है दोनों सभ्यताओं में स्वास्तिक का चिन्ह दृष्टिगोचर होता हैं। मोहन जोदडों से सादृश्य हैं। यथा सूर्य,अग्नि,सोम,आदित्य आदि योगी के रुप में श्री शंकर की एक मूर्ति भी हस्तागत हुई है। ऐसी वस्तुओं और मूर्तियां का मिलना,श्री एल;एन, ब्रेल्स फोर्ड के कथनानुसार'प्राचीन सिन्धु सभ्यता को,सनातन हिन्दू धर्म के समीप पहुंचाता है। सिन्धु घाटी की महान सभ्यता की अनेकानेक विशेषतायें हैं। संसार के विख्यात पुरातत्वेत्तओं, प्राच्य कलाविदों,शिलालेख विशेषज्ञों एवं इतिहासविदों का मत है कि अभी इस संबंध में और खोज,शोध,कार्य एवं तुलनात्मक अध्ययन होना शेष हैं।

वर्तमान में सिन्धुजन अपने महान पूर्वजों के उक्त,समृद्ध उत्कृष्ट एवं गरिमामय विरासत विरासत के कारण स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे है। पाकिस्तान के वरिष्ठ सिन्धी साहित्यकार ताजल बेवस गर्व से कहते हैं' सिन्ध का इतिहास उतना ही गौरवमय और प्राचीन है,जितने सिन्धवासी। जतने सिन्धवासी। सिन्धवासी उतने ही प्राचीन है जितना मोहन जोदडो। मोहन जोदडो की कहानी उतनी ही प्राचीन है जितनी मानव जाति का इतिहास। इसलिये सिन्ध की संस्कृति की आयु उतनी ही बडी है, जितनी इस धरती की आयु।'